गुलाबचन्द प्रसाद अग्रवाल कॉलेज

सड़मा छतरपुर, पलामू

"युवा करते आत्महत्या- पलामू के संदर्भ में"

एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

स्नातक समाजशास्त्र, प्रतिष्ठा तृतीय वर्ष के अष्टम पत्र के अंतर्गत क्षेत्रीय अध्ययन

सत्र– 2014–2017

सर्वेक्षण कर्ता :–

नाम – Susma Vishwakarma

क्रमांक – 15BA1413370

पंजीयन सं. – NPU/16078/14

निर्देशक :–

राज मोहन (व्याख्याता)

समाजशास्त्र विभाग

गु0 प्र0 अ0 महाविद्यालय

सड़मा छतरपुर (पलामू)

नीलाम्बर–पीताम्बर विश्वविद्यालय, मेदिनीनगर

प्रमाण पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि ..... Susma Vishwakarma ..... ने " युवा करते आत्महत्या–पलामू के परिपेक्ष्य में" अनुसंधान, स्नातक प्रतिष्ठा समाज शास्त्र विभाग गुलाबचंद प्रसाद अग्रवाल महाविद्यालय के क्रमांक ....15BA1413370.... सत्र 2014-2017 मेरे निर्देशन एवं मार्गदर्शन में संपन्न किया।

तथ्यों एवं आंकड़ो का संकलन सत्य के आधार पर अधिकृत है।

20/6/17

मुख्य पर्यवेक्षक

राज मोहन (व्याख्याता)

समाजशास्त्र विभाग

गु0 प्र0 अ0 महाविद्यालय सडमा,

छतरपुर, पलामू झारखण्ड

Sushma vishwakarma

नाम :– Susma Vishwakarma

क्रमांक :– 15BA1413370

पंजीयन संख्या :– NPU/16078/14

सत्र :– 2014-2017

नीलाम्बर – पीताम्बर विश्वविद्यालय, मेदनीनगर

घोषणा

मैं एतद् द्वारा घोषणा करता हूँ कि मेरे द्वारा किया गया परियोजना जिसका शीर्षक ''युवा करते आत्महत्या पलामू के संदर्भ में'' है। समाजशास्त्रीय अध्ययन समाजशास्त्र के प्रतिष्ठा उपाधि कार्यक्रम का आंशिक भाग है।

यह मेरा स्वयं का मूल कार्य है, तथा किसी अन्य अध्ययन कार्य की शर्त को पुरा करने के लिए न तो किसी संस्था में न तो किसी महाविद्यालय में पहले भेजा है।

नाम :– Susma Vishwakarma

क्रमांक :– 15BA1413370

पंजीयन संख्या :– NPU/16078/14

सत्र :– 2014-2017

[illegible]

[illegible]

[illegible]

- [illegible]
- [illegible]

[illegible]

- [illegible]
- [illegible]
- [illegible]
- [illegible]
- [illegible]
- [illegible]
- [illegible]
- [illegible]
- [illegible]

[illegible]

[illegible]

- [illegible]

- समाजिक शोध में उपयोगी प्रविधि – उपकल्पना / प्राकल्पना , प्रश्नावली, अनुसूची, निर्देशन।
  - ❖ अवलोकन
    - सहभागी
    - असहभागी
- साक्षत्कार अनुसूची विधि
  - ❖ व्यक्तिगत साक्षात्कार विधि
  - ❖ समुहिक साक्षात्कार विधि
  - ❖ तथ्य संकलन
    - सारणीय, एवं विशलेंषण।
      - ❖ आयु के आधार पर
      - ❖ वैवाहिक स्थिति के आधार पर
      - ❖ धर्म के आधार पर
      - ❖ शिक्षा के आधार पर
      - ❖ लिंग के आधार पर

खण्ड – डी

निष्कर्ष

संदर्भ ग्रंथ सूची

फाटो ग्राफ

सक्षात्कार अनुसूचि का प्रतिलिपि

खण्ड – ए

आभार–ज्ञापन

क्षेत्रीय कार्य के इस प्रतिवेदन में मैनें अपनें और सहयोगियों तथा निर्देशक के सहयोग से आठ दिवसीय क्षेत्रीय अध्ययन के बाद तैयार किया है। यदि मुझे कतिपय विशिष्ठ लोगों से इन कार्यो को पुरा करनें में यर्थोचित सहयोग नहीं मिलता तो मैं अपने क्षेत्रीय शोध कार्यो को कभी पूरा नही कर पाता। इन लोगो को विशेष रुप से याद करते हुए यह जानना चाहता हूँ कि कोई भी कार्य किसी व्यक्ति के सहयोग के बिना संभव नहीं है।

सर्व प्रथम मैं अपने महाविद्यालय के सचिव एवं प्राचार्य के प्रति अपना/अपनी कृतज्ञता प्रकट करता हूँ, क्योंकि उन्होने अपने महाविद्यालय में समाजशास्त्र का विभाग खोलकर प्रतिष्ठा के हम सभी छात्र एवं छात्राओं के लिए अवसर प्रदान किया।

मैं अपने शोधकर्ता के निर्देशक प्रो. राज मोहन (व्याख्याता) समाजशास्त्र के प्रति अपना आभार सच्चे दिल से प्रकट करता हूँ। क्योंकि उन्होने सब समाजशास्त्र प्रतिष्ठा के छात्र एवं छात्राओं को सही सुझाव निर्देश एवं अपनी शुभकामना दिया है। महाविद्यालय के शिक्षक शिक्षकोत्तर कर्मचारियों के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ जो ज्ञात अज्ञात रुप से सहयोग कर मेरा क्षेत्रीय कार्य पुरा करने में सहयोग किया।

उन महान चिंतक समाजशास्त्रीयों का आभारी हूँ, जिनकी सहायता से समाजशास्त्रीय ज्ञान मिला तथा पुस्तकें उपलब्ध हो सकी तथा समाजशास्त्र के प्रति विशेष अभिरूचि पैदा हुई।

मैं पलामू वासियों के प्रति अपना आभार प्रकट करता हूँ, जिनके सहयोग के बिना शासद मेरा यह प्रतिवेदन अधूरा रह जाता। उन्होने मुझे अनुसंधान के कार्यों में उदारता पूर्वक समय देकर तथ्यों के संकलन में अपना महत्वपूर्ण सहयोग दिया। मैं अभिभाव अपने मित्रो एवं शुभचिंतकों के प्रति भी आभार व्यक्त करता हूँ।

नाम/ह0 Sushma Vishwakarma

पलामू का एक परिचय

वर्तमान पलामू जिला झारखण्ड प्रांत के अंर्तगत $23^0 20^0$ और $24^0 39^0$ अक्षांस उत्तर एवं $84^0 58^0$ और $83^0 20^0$ देशान्तर रेखाओं के बीच 4914 वर्ग मील में अवस्थित है। इसके उत्तर में गया–शाहाबाद, पश्चिम में मिर्जापुर, दक्षिण में रांची सरगुजा, तथा पूर्व में कुछ गया तथा हजारीबाग के जिले पड़ते है।

साधारणतः इस जिले का आकार एक समान्तर चतुर्भुज सा है। जिले का अधिकतम भूखण्ड जंगल, पहाड़ी से अक्षादित है। फिर भी उत्तर पूर्व का भूभाग विहार की अन्य समतल भूमि से मिलता जुलता है। उत्तर–पश्चिम में जपला परगना की भूमि भी कुछ समतल और कुछ उबड़ खाबड़ सी है।

प्राकृतिक दृश्य के विचार से इस जिले को यदि प्रकृति का विशेष क्रीड़ा स्थल कहा जाय तो कोइ अत्युक्ति नहीं होगी। पहाड़ी–शिखर, उँची–नीची भूमि, हरे–भरे जंगल, टेढ़ी–मेढ़ी पगडंडियां और छल–छल, कल–कल करती हुई बहनेवाली नदियां सब मिलकर एक अपूर्व सौंदर्य उत्पन्न करती है।

ग्रीष्म, वर्षा, शीत और वसंत में इस वन प्रांत की शोभा ऋतु विशेष के अनुसार अपने दंग की निराली होती है। जेठ की तपती–झुलसती दोपहरी में सुखे नंगे पहाड़ और खडखड़ाते वृक्ष यदि उदासी उत्पन्न होती है तो सावन और भादो में लताओं और नवजात पौधों से लदी धरती एवं पर्वत उमंग और उत्साह का सृजन करते हैं। इसी तरह शीतकालीन शुष्कता और गंभीरता भी दर्शकों के मन को शांत और गंभीर बनाते हैं। ऋतुराज बसंत में रंग–बिरंगे फूलों की मादक सुगंध एवं नव पल्लक्ति वृक्ष तथा वन आनंद और उमंग की चेतना तरंगित करते हैं।

पलामू के नामकरण पर विहंगम दृष्टि डाले तो पता चलता है कि यहां के विद्वानो में नामकरण को लेकर मतैक नहीं है। भिन्न–भिन्न मत प्रकट करते है, जैसे – सहस्रो वर्ष पूर्व यह भूखंड दुर्मेघ धनघोर जंगल–पहाड़ो से अच्छादित था मानव अत्यधिक ठंढ के कारण मर जाया करते थे। इसलिए यह सिल पलामू अर्थात पाला से मरने वाला स्थान पाला+मू (द्रविड भाषा मे 'मू' का अर्थ घर) अर्थात पलामू नाम पड़ा। एक दुसरे अन्वेषक का विचार है कि औरंगा नदी के तट पर स्थित किले में रहने वाली कुल देवी 'पालामा' थी उसी के नाम पर इस क्षेत्र का नाम 'पालामा' घोषित किया गया। पालामा का अप्रभंस शब्द पलामू है। इस क्षेत्र में प–पलाश, ला–लाह, म–महुआ के अधिकता बहुलता के कारण इस क्षेत्र का नाम पलामू पड़ा। ऐसी कई नाम करण पलामू के संदर्भ में सुनने जानने को मिलते है।

आज 21वीं शताब्दी में जब पलामू के वर्तमान परिवेश को देखते है तो चिंतित हो जाया करता हूँ। आज यहां के युवा वर्ग अपनी जिंदगी से हताश–निराश, परेशान और मानसिक उत्पीड़न वेरोजगारी और निराशा के कारण 'आत्महत्या' का रास्ता चुन रहे हैं जो समाज के लिए चिंतन मनन का विषय है। समाज शास्त्रीय अध्ययन से यह ज्ञात होता है, कि यह कोई व्यक्तिगत कारण नहीं बल्कि सामाजिक कारण है। अंर्तराष्ट्रीय विख्यात समाजशास्त्री के आत्महत्या के सिद्धांत हू वहू देखने को मिलते है। जंगल पहाड़ो से घीरा पलामू में अधिकतर आत्महत्या गर्म मौनसून तथा पहली दुसरी बर्सात के पानी तक होती है क्योंकि इस मौनसून में लोगो का मन अधिकतम गर्म, चिड़चिड़ाहट इत्यादी होता है और मानसिक संतुलन खोकर गलत निर्णय ले लेते है।

पलामू क्षेत्र में आत्महत्या के अलग साधन क्षेत्र चुना है–रेलपटरी। पलामू के अखबारों में छपते रहे –''रक्तरंजित होती पलामू की रेल पटरियां'' (दैनिक

हिन्दुस्नान) आत्महत्या के कई रास्ते है–जहर खाकर, फांसी लगाकर, नदी तालाब में डुबकर, आग लगाकर, बिजली के तार किन्तु यहां रेलपटरियां ही अधिक उपयुक्त मानते है क्योंकि अन्य विधि से मरने के समय बचने का अधिकांश चांस रहता है जबकि रेल में 100 प्रतिशत निश्चित होकर आत्महत्या करते हैं।

पलामू के भौगोलिक परिवेश जंगल, पहाड़, सुखा, गरीबी, अकाल, भोले–भाले होने के कारण ठागे जाना इत्यादी मांसिक संवेगनात्मक को प्रभावित करते हैं।

एक नजर में पलामू के पलामू के आकड़े

जनसंख्या	:–	1936319
पुरुष	:–	1093876
स्त्री	:–	932443
ग्राम जनसंख्या	:–	1710612
शहरी जनसंख्या	:–	225693
क्षेत्रफल	:–	5043.8 वर्ग एकड़
अनुमंडल	:–	03
प्रखण्ड	:–	20
पंचायत	:–	283
गांव	:–	1918
वन क्षेत्र	:–	1281434 हेक्टेयर
समुद्र तल से ऊ0	:–	222 मी0
कृषि योग्य भूमि	:–	173553
खनिज संम्पदा	:–	ग्रेफाइट, ग्रेनाइट, कोयला, मैगनेटाइट आदि

सामान्य वर्षा :– 1257.8 मी0 मी0

जीविकोपार्जन के मुख्य साधन :– खेती, मजदुरी, घरेलु उद्योग, धंधे

मुख्य उद्योग :– आदित्य बिरला केमिकल्स प्रा0 लि0 (रेहला)

साक्षरता दर :– 65.5 प्रतिशत साक्षरो की कुल संख्या 1061012 है।

कैसे पहुँचे :– सड़क मार्ग व रेल मार्ग

रेलवे स्टेशन :– डाल्टेनगंज स्टेशन

शिक्षा व्यवस्था :– नीलाम्बर पीताम्बर विश्वविद्यालय–01, अंगीभूत महाविद्यालय–04, स्थायी महाविद्यालय–05, अस्थायी महाविद्यालय–11, बी0 एड महाविद्यालय–14, बी0 पी एड महाविद्यालय–01, इंजिनियरिंग–02, डेन्टल महाविद्यालय–01, लॉ कॉलेज–01,

पलामू के दर्शनीय स्थल :–

(1) काली मंदिर रेड़मा, गुरूद्वारा श्री गुरूसिंह सभा, शांति की मनी महागिरजाघर, मेदनीनगर का हृदय स्थली छहमुहान, आस्था का प्रतिक चेगौना धाम, महाभारत कालीन भीम चूल्हा, हैदर नगर के देवी धाम में लगता भूत मेला

(2) पर्यटक स्थल– नेतरहाट, बेतला, अमझरिया, केचकी जलप्रपात (बूढ़ाघाघ, धधरी, गुटाम घाघ, हिसातू घाघ, गूँगा घाघ, विष्णुधारा, परसडीह प्रपात)

खण्ड – बी

प्रस्तावना

नीलाम्बर–पीताम्बर और प्रतापी राजा मेदनीराय के भूमि पलामू में नीलाम्बर–पीताम्बर विश्वविद्यालय ने उच्च शिक्षा का दीप जला रही है। पलामू प्रमण्डल के अंतर्गत एक विश्वविद्यायालय, 04 अंगीभूत महाविद्यालय, 05 स्थायी महाविद्यालय, 11 अस्थायी महाविद्यालय, 14 बी0 एड0 महाविद्यालय 01 बी0 सी0 एड0 महाविद्यालय, 02 इंजिनियरिंग महाविद्यालय, 01 डेन्टल महाविद्यालय के अलावे कई छोटे–छोटे नीजी आई0 टी0 आई0 संस्थान का सफल संचालन कर गुणात्मक पूर्वक रोजगारोन्मुखी शिक्षा का सफल संचालन हो रहा है।

जिस तरह पीछड़े और पहाड़ी इलाके में शिक्षा ग्रहण करने का युवा वर्गो के पास प्रयाप्त सुवसर प्रदान किया जा रहा है ताकि भावी देश के कर्णधार युवा वर्ग सामाजिक व आर्थिक स्थिति सुदृढ़ कर समाज सेवा/देश सेवा में योगदान दे सके। वही दुसरी ओर सोच से विपरीत वर्तमान परिवेश में मानसिक तनाव, रोजगार की असफलता, जिंदगी से निराश परेशान होकर युवा आत्महत्या कर रहे है। जो समाज के लिए बड़े ही चिंता का विषय है।

बी0 डी0 एस0 कॉलेज गढ़वा की क्षात्रा सोनाली कुमारी (21 वर्ष) गर्ल्स हॉस्टल में आत्महत्या कर ली, वही दुसरी ओर राजधानी के एक नीजी हॉस्टल में रहकर मेडिकल की तैयारी कर रही पलामू की छात्रा इशिता सिंह की आत्महत्या से पलामू मर्माहत है, वहीं मैट्रीक के परिक्षा परिणाम 2017 मे अनुर्तीन होने के कारण कुए में कुदकर आत्महत्या कर ली है, वही शहर के नावाटोला निवासी इकबाल हुसैन का पुत्र आसिक अंसारी ट्रेन के आगे कूदकर आत्महत्या कर ली इसके

अलावा नरेश शर्मा की पुत्री रीना कुमारी (16 वर्ष) ट्रेन से कट कर आत्महत्या कर ली। इस तरह की घटनाऐं हमेशा होती है लेकिन खबर की सुर्खी नही बन पाती है जिससे आम जनभासक नही जान पाता है किन्तु आंकड़े देख चौक जाना लाजमी है।

पलामू के चर्चित सर्जन डॉ. मोहन प्रसाद रांची में रेलपटरी पर आत्महत्या कर ली वही टी. पी. सी. 2 के सदस्य ब्रह्मदेव गंजू ने मेदनीनगर में रेलपटरी पर मालगाड़ी से कटकर आत्महत्या कर ली।

इसी चिंता से चिंतित रहने के कारण समाधान और सुझाव के ख्याल रखकर स्नातक समाजशास्त्र सत्र 2014–2017 के क्षेत्रीय कार्य में "युवा करते आत्महत्या" पलामू के संदर्भ में लघु शोध निबंध लिखकर अपने आप को समाज चिंतक समझ रहा हूँ। परंतु आंतरिक खुशी तब मिलेगी या मेहनत का प्रतिफल तब महसुस करूंगा जब युवा वर्ग इसे गहरी चिंतन से पढ़कर अमल कर सकेंगे साथ–साथ इस सुझाव को अपने–अपने मित्रो में चर्चा कर सार्थकता साबित करेगें।

युवा करते आत्महत्या

अपने देश में हर साल एक लाख से ज्यादा लोग आत्महत्या करते हैं। नेशनल क्राइम रिकॉर्ड ब्यूरो के नये आंकडे के मुताबिक, 2014 में 131666 लोगों ने आत्महत्या की, जिनमें 18 से 30 साल आयुवर्ग के लोगो की संख्या सबसे ज्यादा (44870) थी। अगर इसमें 14 से 18 साल की उम्र में आत्महत्या करने वाले किशोरों की संख्या (9230) को भी जोड दें तो नजर आयेगा कि 2014 में आत्महत्या करने वालो कुछ लोगों में नवयुवक–युवतियों की तादाद करीब 40 फीसदी रही। इस चिंताजनक रूझान की पुष्टि एक नयी शोध रिपोर्ट से भी हुई है, प्रतिष्टित लैसेट जेर्नल में प्रकाशित रिपोर्ट के मुताबिक 2013 में भारत में आत्महत्या करने वालों में 60 हजार से भी ज्यादा लोग महज 10–24 साल के थे। किसी नौजवान/युवा ने आत्महत्या का रास्ता क्यों चुना इस प्रश्न का सटीक उत्तर खोज पाना विद्वानो के लिए हमेशा से कठिन रहा है।

अंतरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त समाजशास्त्री एमिल दुर्खाइम आत्महत्या के कारणों को समाज में निहित मानते है। आत्महत्या के प्रसंग में व्यक्ति बनाम समाज का विवाद पुराना है। और आगे भी रहेगा। लेकिन यह बात तकरीबन निर्विवाद है, कि– हर आत्महत्या में जीवन के आखिरी क्षण तक खुद को बचा लेने कि करूण पुकार होती है। सुसाइड नोट में भले यह लिखा हो कि 'मेंरी आत्महत्या के लिए कोई भी जिम्मेवार नहीं' तो भी आत्महत्या करने वाले की जीवन परिस्थितियां या फिर सुसाइड नोट का ही कोई अंश यह संकेत करने के लिए काफी होता है कि गहन मानसिक पीड़ा के बोध के बीच जिस घड़ी में किसी ने खुदखुशी का फेसला लिया था उस घड़ी यदी सहारे की उम्मीद जगानेवाला कोई व्यक्ति या व्यवस्था मौजूद होती – तो यह फैसला बदल भी सकता था।

गौर करें तो हमारे आसपास ऐसा सहारा आज दुर्लभ है। तेज विकाश ने व्यक्तिगत होड़ को बढ़ाया है, जिसका सबसे ज्यादा शिकार नौजवान तपके के लोग हुए है, क्योकि राज्य, समाज और सार्वजनिक तौर पर प्रतिष्ठित की जा रही आकांक्षाएं उस पर जीवन की दौड़ में निरंतर आगे रहने का दबाव डालती है। जिस समाज में पारस्परिक सहयोग का स्थान आपसी प्रतिस्पर्धा ले ले, वह मनोविकार ग्रस्त समाज ने दुनिया के समाज विज्ञानी सन् 1930 से ही यह बातें आ रही है कि ऐसे समाज में जीवन की रचनात्मक संभावनाएं लगातार क्षीण होती जाती है। युवाओं के बीच आत्महत्या की घटनाएं इसी नीयती का संकेत है और देश समाज को इसके प्रति खबरदार करती है। इस समाज की ज्वलंत मुद्दा पर चर्चा नहीं हो तो युवा विहीन समाज हो जाने कि स्थिति परिदृश्य होगी जिसका जिम्मेवार समाज होगा। साथ ही विद्वान जन समाज के युवा व शिक्षा विद भी अलग नहीं रह पायेगे।

आत्महत्या की स्थिति

सम्भवतः आत्महत्या सभी धर्मो द्वारा वर्जित है। पूर्व से अन्य धर्मो के अपेक्षा इस्लाम धर्म के मानने वाले आत्महत्या की कड़ी निंदा करते है कुरान आत्महत्या को दुसरे की हत्या करने से भी अधिक गंभीर आत्महत्या मानता है। भारत के पूर्वी देशों में ऐसे रीति रीवाज हैं जो आत्महत्या को प्रोत्साहित करते है। भारत में सती प्रथा भी एक ऐसा ही रीवाज था, जिसमें पति के मर जाने उपरांत पत्नि अपने आप चिता में पति के शव के साथ जलकर मर जाती थीं। जापान में पराजित जेनरल ''हारा कोरी'' प्रथा के अनुसार आत्महत्या कर लेते थे। संसार के विभिन्न देशों कि विभिन्न परंपराओं, धार्मिक रीतियों और सामाजिक मनोवृतिओं का प्रतिबिम्ब हमें आत्महत्या कि दर में दिखलाई पड़ता है। ''आत्महत्या'' कि घटनाऐं संयुक्त राष्ट्र अमेरिका में सबसे अधिक होती है। जर्मनी, ब्रिटेन, तथा जापान में भी आत्महत्याओं की संख्या कम नहीं है। यूरोप में आत्महत्या की दर आस्ट्रेलिया चेकोस्लो वाकिया, जर्मनी और स्विट्जरलैंड में सबसे ऊँची है। यूरोप के बाहर जापान में आत्महत्या एक भिष्म सामाजिक समस्या है। भारत में आत्महत्या विषयक आंकड़े सर्वप्रथम 1964 में एकत्र किया गया। आत्महत्याओं में पुरूषों का प्रतिशत 56. 70 पाया गया। वर्ष 1970 ई0 में 28428 आत्महत्याऐं हुई। 1978 ई0 में यह संख्याऐं 55000 से भी ज्यादा आंकी गई। शहरो की अपेक्षा गांवो में आत्महत्या कम है, क्योंकि ग्रामिण जीवन नगरीय जीवन कि अपेक्षा अधिक स्थिर होता है। वहां प्रथमिक संस्थाओं का प्रभाव जीवन पर अधिक गहरा होता है। धर्म और रीतियों का नियंत्रण भी प्रभावशाली होता है।

आत्महत्या की परिभाषा

1. दुर्खीम (E DURKHIM) :– "आत्महत्या का तात्पर्य किसी भी ऐसी मृत्यु से है जिसका प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से व्यक्ति की सकरात्मक अथवा नाकारात्मक क्रिया का परिणाम होता है, तथा जिस परिणाम के बारे में व्यक्ति पहले से ही परिचित होता है।
2. विलनार्ड (Clinard M.B.) :– विलनार्ड के अनुसार "आत्महत्या का तात्पर्य स्वयं को नष्ट करना, आत्मघात करना या कानूनी दृष्टि से अपनी हत्या करना है।
3. इनसरइक्लोपेडिया ब्रिटानिका (ENCYECOPAEDIA BRITANKA) :– "आत्महत्या" अपनी इच्छा से और जानबूझकर किया गया आत्महनन है।
4. बेसिल बंजल (BESSILE BUNZAL) :– के शब्दो में "आत्महत्या की समस्या एक रूप में व्यक्ति की उन तीव्रतम समस्याओं का समाधान है जिसका हल वह किसी प्रकार नहीं पा सकता है।

उपयुक्त परिभाषा के आधार पर यह कहा जा सकता है कि

(क) "आत्महत्या" जिसमें व्यक्ति अपना हित चाहता है।

(ख) "आत्महत्या" जिसमें व्यक्ति दूसरों की श्रद्धा अथवा दूसरों का परित्राण पाना चाहता है।

(ग) "आत्महत्या" केवल वही कृत्य है जिसमें उसका कर्ता चेतन और जागरूकता रूप से परिणाम को समझते हुए आत्मबलिदान कर दे।

(घ) "आत्महत्या" में व्यक्ति की चेष्टा अथवा प्रयास का तत्व निहित होता

है। आकस्मिक रूप से व्यक्ति सुप्तावस्था में यदि गिरकर मर जाये अथवा भूल से विष खा ले तो इसे केवल दुर्घटना समझा जायेगा।

(ड.) "आत्महत्या" केवल परिस्थितियों का सामना करने की असमर्थता से ही सम्बन्धित नहीं होती बल्कि कभी व्यक्ति परिस्थितियों को समूह के अनुकूल बनाने के लिए भी "आत्महत्या" करता है। ऐसी "आत्महत्या" में जागरूकता तथा प्रयास का स्तर और अधिक स्पष्ट तथा कभी–कभी योजनाबद्ध तक होता है।

आत्महत्या के बारे में दुर्खीम के विचार (VIEWS OF DURKHIM REGARDING SUICIDE)

दुर्खीम ने आत्महत्या के बारे में लिखा है, कि– "आत्महत्या का मतलब किसी भी ऐसी मृत्यु से है, जो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से व्यक्ति की सकारात्मक या नाकारात्मक क्रिया का परिणाम होती है तथा जिस परिणाम के विषय में व्यक्ति पहले से ही परिचित होता है" दुर्खीम के इस कथन से उन सभी सिद्धांतो का खंडन होता है जो अतिरिक्त सामाजिक कारको को आत्महत्या का कारण मानते है। अतः समूहो के सामाजिक संगठन में कुछ ऐसी बात होनी चाहिए जो लोगों को आत्महत्या करने में असमर्थ हो।

दुर्खीम ने आत्महत्याओं को निम्न श्रेणियों में विभाजित किया है:–

1. अहंवादी आत्महत्या (EGOISTIC SUICIDE) :– अहंवादी आत्महत्या में व्यक्ति अपने को समाज पृथक और कटा हुआ महसुस करता है, वह सोचता

है कि लोग उसकी उपेक्षा कर रहे है। एकान्तवाद से उसका बाझिल मन आहत होता है और अपनी जीवन लीला समाप्त करने के लिए आत्महत्या कर बैठता है। व्यक्तिगत जीवन संतुलित रहता है जब वह समाजिक जीवन के साथ निरंन्तर सम्बद्ध रहे। जब व्यक्तिगत जीवन सामाजिक जीवन से पृथकता अनुभव करने लगता है अथवा समाज संगठन एवं एकीकरण का आभाव होता है, तो व्यक्ति अपने को समाज से मुक्त करने लगता है। समाज का नियंत्रण उस पर शिथिल हो जाता है। समाज की यह स्थिति आत्महत्या के दर में बृद्धि करती है। अहंवादी आत्महत्या वे लोग करते हैं जिनका अहं प्रवल होता है। अहंवादी व्यक्ति किसी तरह स्वयं की स्वार्थ पूर्ति में लीन होता है तथा समाज के साथ कदम मिलाकर नहीं चल सकता। व्यक्तिगत चेतना एवं सामाजिक चेतना में कोई साम्य नहीं होता।

2. परार्थवादी आत्महत्या (Altruistic Suicide)अहंवादी आत्महत्या के ठीक विपरीत कारणों से परार्थवादी आत्महत्या की जाती है। जब किसी समाज में इतना अधिक एकीकरण पाया जाता है, की वहां व्यक्ति का महत्व ही समाप्त हो, व्यक्ति की हर क्रिया का निर्देशक समाज हो, व्यक्तिगत रूची और विचार को भुलकर उसके स्थान पर सामूहिक रूचि और विचार को महत्व दिया हो तो ऐसी स्थिति में की जाने वाली आत्महत्या को दुर्खीम ने परार्थवादी आत्महत्या कहते है। जैसेः– भारत में कुछ सन्यासी प्राणायाम द्वारा समाधिस्य होकर आत्महत्या कर लेते थे। सती प्रथा, जहर, आदि भी इसी प्रकार की आत्महत्याऐं हैं। जैन धर्म में भूखे रहकर आत्महत्या की जाती है। बनारस के गंगा घाट पर मुक्ति पाने के लिए गंगा के पानी में कूद पड़ना तथा जापान की हराकरी प्रथा, आदि परार्थवादी आत्महत्या के अन्तर्गत आते है। समाज की शक्ति या सामाजिक दायित्व उन्हें आत्महत्या की प्रेरना देता है।

3. आदर्शहीन आत्महत्या (Anomic Suicide)"आदर्शहीन आत्महत्या" समाज में रियम हीनता अथवा आकास्मिक परिवर्तन उत्पन्न हो जाती है। ऐसी स्थिति में व्यक्ति निराशा या अत्यधिक प्रसन्नता अनुभव करता है जिससे उसका मानसिक संतुलन बिगड़ जाता है और वह आत्महत्या कर बैठता है। अधिक संकटों के समय अथवा पारिवारिक व वैवाहिक जीवन में भह आदर्शहीन स्थिति में आत्महत्या की जाती है। यह आत्महत्या उन परिस्थितियों से उत्पन्न होती हैं जिसका सामना व्यक्ति सामान्य जीवन में नहीं करता ऐसी स्थिति में वह परिस्थितियों के अनुकूल नहीं कर पाता, उसका सामाजिक सन्तुलन बिगड़ जाता है। समूह का नियंत्रण समाप्त हो जाता है, जिससे इस प्रकार की आत्महत्याओं को बढ़ावा मिलता है।

जब सामाजिक नियमों का प्रभाव कमजोर पड़ जाता है, लोग मनमाने ढंग से अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करने लगते है, तब समाज में अव्यवस्था फैल जाती है। आर्थिक तथा अन्य प्रकार के संकट सामाजिक नियंत्रण की शिथिलता के लिए उत्तरदायी है। समाज की इसी अवस्था को दुर्खीम ने आदर्श हीनता या एनोमी नाम दिया है। इस दशा में लोगों का मार्गदर्शन करने के लिए उनके सम्मुख कोई आदर्श नियम नहीं रहते तथा वे दिशाहीन होकर मनमाना व्यवहार करने लगते हैं। आत्महत्या इसी व्यवहार का एक रूप है।

4. घातक आत्महत्या (Fatalistic Suicide) उपयुक्त तीन प्रकार की आत्महत्याओं के अतिरिक्त दुर्खीम ने कुछ ऐसी आत्महत्यों का उल्लेख किया है जिन्हें वह घातक आत्महत्या कहते हैं। इस प्रकार की आत्महत्या के लिए उत्तरदायी कारक अत्यधिक नियंत्रण आदर्शवादीता और कठोर नियम पालन

आदि है, जिससे तंग आकर व्यक्ति स्वतंत्र होने की इच्छा से आत्महत्या कर लेता है:– उदाहरण– जब काई युवक/युवती अपनी स्वतंत्र वासना पूर्ति की प्रवृति को संतुष्ट करना चाहता है किन्तु समाज का नियम उसे एक पत्नि/पति तक सीमित रहने को बाध्य करता है, तो यह मजबूरी ही उसे आत्महत्या की प्रेरणा देता है। इसी प्रकार से संतान हीन विवाहित स्त्री माँ बनना चाहती है, किन्तु सामाजिक नियम उसे पर–पुरूष से सहवास की अनुमति नहीं देते। इसी प्रकार दास लोग भी मालिकों के शोषण और अत्याचारों से तंग आकर आत्महत्या करते हैं जिसे घातक आत्महत्या कहा जाता है।

दुर्खीम ने आत्महत्या की सामाजिक प्रकृति को प्रकट करने के लिए यूरोप के ग्यारह देशों (फ्रॉस, इंगलैण्ड, बकोरिया, डेनमार्क, सेक्सोनी आदि।) विभिन्न देशों की विभिन्न वर्षों की आत्महत्याओं की घटनाओं की सारणी प्रस्तुत कर यह प्रकट किया कि प्रत्येक समाज में हर वर्ष आत्महत्याओं की संख्या में बहुत कम फेर बदल आता है। ग्यारह देशों के गहन वैज्ञानिक अध्ययन के आधार पर "आत्महत्या के संबंध में दुर्खीम ने बहुत से ऑकड़े एकत्रित किए है, जो इस प्रकार है।

क. प्रत्येक समाज में आत्महत्या दर में हर वर्ष लगभग–लगभग हर एक संख्या में बहुत कम फेर बदल आता है।

ख. जाड़े के अपेक्षा लोग गर्मी में ज्यादा आत्महत्या करते है।

ग. स्त्री के अपेक्षा पुरूष लोग ज्यादा आत्महत्या करते है।

घ. बच्चे के अपेक्षा युवक लोग ज्यादा आत्महत्या करते है।

ड. साधारण लोग के अपेक्षा सैनिक लोग ज्यादा आत्महत्या करते है।

च. विवाहित लोगों के अपेक्षा कुवार और विदुर लोग ज्यादा आत्महत्या करते है

छ. बच्चों के अपेक्षा बिना बच्चों वाले लोग ज्यादा आत्महत्या करते है।

ज. कैथोलिक के अपेक्षा प्रोटेस्टैण्ट लोग ज्यादा आत्महत्या करते है।

आत्महत्या के साधन

आत्महत्या का जब मनुष्य निश्चय करता है तब वह तत्काल के साधन ढूढ़ता है, ताही ऐसा न हो कि समय के बदलने के साथ उसका कुछ निश्चय भी बदल जाय। आत्महत्या के साधन इस प्रकार है :–

1. विषपान
2. जल में डूब कर
3. फांसी लगाकर
4. बिजली के करैन्ट से
5. रेल पटरी पर कटकर
6. शरीर के नश को काटकर
7. गोली मारकर
8. आग लगाकर

आत्महत्या के यह साधन अलग–अलग परिवेश (ग्रामीण/शहरी/सुदरर्त्ती) पर निर्भर करता है। तथा नजदिकी साधन की उपलब्धता पर सह तय करता है, कि आत्महत्या करने वाला मनुष्य कौन सा साधन चयन करता है।

नोटः– समाज में बढ़ते असमाजिक तत्वों व बढ़ते अपराध एक नया मोड़ पर आकर खड़ा हुआ है। आत्महत्या के मुखौटों के पीछे अपराध कर अपराधी अपने घिनौने अपराध से बच जाते है, और आत्महत्या के आकड़ों में वृद्धि होती है। इसलिए बड़े ही गहनता, और गहराई से किसी आत्महत्या पर चिंतन मनन करने की जरूरत है। उस व्यक्ति के परिवारिक और समाजिक परिपेक्षों को गहनता से परिक्षण की जरूरत है। ताकि अपराध इसके मुखौटे के पीछे न छिप सके।

ऐसे कई उदाहरण देखने को मिलतें है। किसी व्यक्ति के हत्या को बड़ी आसानी से आत्महत्या का सकल दे देते है।

"आत्महत्या की समाजशास्त्रीय व्याख्या"

"आत्महत्या" (Le suicide जिसका अंग्रेजी में अनुवाद 'The suicide' है) समाजशास्त्रीय दुर्खीम की तीसरी प्रमुख कृति है, जिसका प्रकाशन सन् 1897 में हुआ। इस ग्रंथ में दुर्खीम ने समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण का तथ्यात्मक प्रमाण प्रस्तुत किया करने का प्रयत्न किया है। दुर्खीम ने आत्महत्या को सामाजिक समस्या मानकर उस पर समाजशास्त्रीय दृष्टि से विचार किया है। अब तक आत्महत्या को एक व्यक्तिक समस्या ही माना जाता रहा है, किन्तु दुर्खीम ने समाज को आत्महत्या के लिए उत्तरदायी माना है। दुर्खीम ने पागलपन, मद्यपान, तथा अन्य मनोविकारों और प्राकृतिक पर्यावरण का आत्महत्या के साथ सम्बन्ध इस रूप में स्वीकार किया है, कि ये सभी सामाजिक कारणों की शक्ति से निश्चित होते है। इस महान समाजशास्त्री ने 'आत्महत्या को मापने के लिए सांख्यिकीय पद्धति को अपनाया। आत्महत्या के अध्ययन में दुर्खीम ने ऐतिहासिक एवं सांख्यिकीय दोनो ही पद्धतियों का प्रयोग किया है।

आत्महत्या के कारण

"आत्महत्या" एक व्यक्तिगत कारण न होकर सामाजिक कारण है। स्त्रीयों के तुलना में पुरूष अधिक आत्महत्या करते है तथा ग्रामीण क्षेत्रों के तुलना में नगरीय एवं शहरी परिस्थितियों में अधिक आत्महत्या करते है। इन सभी तथ्यों को ध्यान में रखते हुए आत्महत्या के निम्नांकित कारण प्रमुख मानते है:–

1. वैयक्तिक कारण :– "आत्महत्या" करने का एक अहम कारण वैयक्तिकरण है। शारीरिक दोष, शारीरिक व्याधियां, मारसिक विकार, व्यक्तिक व्यसन आदि कारणों से अजीज होकर अपना आत्महत्या करना ज्यादा उचित समझता है।
2. पारिवारिक कारण :– पारिवारिक का स्थान व्यक्ति के जीवन को सुसंगठित करने में अधिक महत्वपूर्ण है। जब परिवारिक संगठन इस प्रकार नष्ट हो जाता है कि व्यक्ति परिवार को अपनी मानसिक शांति, सुरक्षा और व्यक्तित्व के विकास में अत्यधिक बाधक समझने लगता है, तो स्वभाविक रूप से उसके मन में अपने जीवन को समाप्त का लेने की भावना प्रबल हो जाती है जिसके फलस्वरूप व्यक्ति आत्महत्या कर लेता है। परिवारिक कारणों में विघटित परिवार, परिवारिक कहल, दामपत्य जीवन में असामंजस्य, दुर्व्यवहार तथा अविश्वास आदि कारण सम्मिलित है।
3. सामाजिक कारण :– विभिन्न समाजों में स्वयं कुछ ऐसी मान्यताएं विश्वास अथवा परिस्थितियां मौजूद हो सकती है जो आत्महत्या की प्रेरणा देने में सहायक हो । यही कारण है, कि सामाजिक संगठन की विभिन्नता के कारण विभिन्न समाजों में आत्महत्या की दर पृथक–पृथक देखने को प्राप्त होती है। जैसे – सामाजिक कुरीतियां, पद हानि, सामाजिक विघटन, समाजीकरण की दोष पूर्ण प्रक्रिया इत्यादी।
4. आर्थिक कारण :– आजीविका न केवल भावानात्मक रूप से व्यक्तित्व के संतुलन को बनाये रखती है बल्कि व्यक्ति को सुरक्षित भी बनाती है। अतः आजीविका आर्थिक संदर्भ में पड़नेवाली बाधा कभी–कभी अत्यधिक विषम परिस्थितियां उत्पन्न करके आत्महत्या का कारण बन जाती है। विभिन्न आर्थिक दशाएं जैसे निर्धनता तथा बेकारी वर्तमान युग में आत्महत्या का एक प्रमुख कारण सिद्ध हुई है। बेकारी की दशा में प्रोढ़ व्यक्ति की अपेक्षा युक्त

अधिक संख्या में आत्महत्या करते हुए पाये जाते है। परिश्रमोपरांत जब प्रोढ़ व्यक्ति बेरोजगार रहते है तो उनके प्रति पत्नि का अविश्वास तथा बच्चो की उदासीनता तथा उदंडता अक्सर उनके धौर्य को समाप्त कर देती है कर देती है। युवा लोग बेकारी के कारण स्वयं को माता पिता और कभी स्वयं को उनकी विपतियों का कारण समझकर आत्महत्या की ओर प्रकृत हो जाते हैं।

अतः आर्थिक अपकर्ष की यह स्थिति कभी–कभी उन्हे इस सीमा तक ले जाती है कि वे आत्महत्या करने हेतु विवश हो जाते है।

5. धार्मिक कारण :– अनेक धार्मिक प्रथाएं तथा विश्वास भी आत्महत्या का प्रमुख कारण है जिनमें धार्मिक रूढ़ियां और पातक की भावना उल्लेखनीय है। धर्म में रूढ़ियों के अधिक समावेश होने से अनेक रूढ़ियां अप्रत्यक्षतः आत्महत्या का कारण बन जाती है। भारत में देवदासी प्रथा तथा सतीत्व संबंधी विश्वासों के तहत की गई आत्महत्या इसका प्रमाण है। इसके अलावे जो धर्म जीतना संकीर्ण और कट्र प्रकृति का होता है। उसके अनुयायिओं में आत्महत्या की दर उतनी ही अधिक पायी जाती है। धर्म का उल्लंघन होने पर व्यक्ति प्रायश्चित रूप में अक्सर आत्महत्या की इजाजत नहीं देता। हिन्दु धर्म में आत्महत्या एक पाप है। माना जाता है कि कुछ धर्म अनेक परिस्थितियों में आत्महत्या को स्वीकृति प्रदान करते है। अतः स्वभाविक है कि ऐसे अनेक परिस्थितियों में आत्महत्या को स्वीकार प्रदान करते है। अतः स्वभाविक है कि ऐसे धार्मिक दृष्टिकोण आत्महत्या को रोकने या उसके वृद्धि करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है।

6. भौगोलिक कारण :– भौगोलिक दशाओं का आत्महत्या प्रत्यक्ष कारण नहीं कहा जाता है, किन्तु इतना तो निरविवाद रूप से सत्य है कि भौगोलिक दशाएं तथा मौसमी परिवर्तन जैसे भूकंप, बाढ़, सुखा, ज्वालामुखी, विस्फोट,

महांमारियों का फेलना, आदि व्यक्ति कि मानसिक संवेगात्मक को प्रभावित करके कभी–कभी आत्महत्या को प्रोत्साहन देती है। दुर्खीम ने आत्महत्या कि दर तथा भौगोलिक कारणों के संबंध को अस्पष्ट करते हुए बताया है कि संसार के विभिन्न समाजो में आत्महत्या की दर जनवरी से जून तक क्रमशः बढ़ती है। तद्पश्चात उसमें कमी होने लगती है, और दिसम्बर में आत्महत्या कि दर सर्वाधिक कम हो जाती है। संक्षेप में इस प्रकार भौगोलिक दशाएं किसी न किसी रूप में आत्महत्या को स्पष्ट प्रभावित करती है।

7. परिस्थितिक कारण :– किसी समूदाय अथवा समूह के चारो ओर मौजूद सामाजिक परिस्थितियां भी उस समुदाय में होने वाली आत्महत्या कि प्रकृति तथा दर को प्रभावित करती है एक समान्य नियम के रूप में स्थायी ''दुर्खीम के अनुसार'' गांवो की तुलना में नगरों तथा शहरों में आत्महत्याएं अधिक होती है। एक सामान्य नियम के रूप में स्थाई अवासीय केन्द्रों के अपेक्षा उन सीनों में आत्महत्या की दर अधिक होती है जहाँ व्यापारिक केन्द्रो और गंदे होटलो का प्रधानता होती है, जहाँ काम करने वाले अधिकांश व्यक्ति बेधरवार होती है। इस तरह जिन सीनो पर जनसंख्या में स्थान परिवर्तन करने की प्रवृति होती है तथा व्यापार में अनैतिकता का समावेश होता है वहाँ भी आत्महत्या कि दर अधिक देखने को मिलती है।

संक्षेप में उपयुक्त वर्णित आत्महत्या के सभी कारणों के अलावा नगरीकरण तथा शहरीकरण से उत्पन्न व्यक्तिवाद औद्योगिक अनुरिक्षा गंदी वस्तियां तथा अत्यधिक मद्यपान आदि भी आत्महत्या के महत्वपूर्ण कारण है। इस प्रकार आत्महत्या को व्यक्ति की परिस्थितियों की संम्पूर्णता के आधार पर स्पष्ट किया जाना चाहिए।

आत्महत्या का निवारण

पोर्ट फील्ड (Port Fild) के मतानुसार "जनसाधारण में आत्महत्या से संबद्ध अनेक भ्रांतियां प्रचलित है, जैसे :– आत्महत्या का कोई पूर्व लक्षण ज्ञात नहीं किया जा सकता जो कहता है वह आत्महत्या नहीं करता, आत्महत्या करने वाले सभी व्यक्ति मानसिक रूप से विकार युक्त होते हैं, आत्महत्या का विचार भी एक प्रकार की बिमारी है अथवा यह कि आत्महत्या करने वाले व्यक्ति के निश्चितता को स्थायी रूप से बदला नहीं जा सकता आदि"

परन्तु वस्तुस्थिति यह है कि आत्महत्या से पूर्व व्यक्ति किसी न किसी के सामने अनेक शब्दों द्वारा अपने मरने की इच्छा अथवा जीवन की निरर्थकता के बारे में बात करना आरंभ कर देता है। कभी–कभी अचानक व्यक्ति द्वारा दूसरों से पूर्व में किये गये कार्यों की माफी मांगना अपना हिसाब किताब ठीक करना अथवा वसीयत आदि करना प्रारंभ कर देता है। अत्यधीक कठिनाइयां होने के बाद अचानक व्यक्ति के चेहरे पर प्रसन्नता,संतोष, तथा सहनशक्ति भी इस बात का लक्षण है कि उसने आत्महत्या का निर्णय कर लिया है। इन दशाओं में व्यक्ति की मानसिकता को समझते हुए उसे आत्महत्या से रोकना संभव हो सकता है इसके अलावा कुछ अन्य प्रयत्नों द्वारा भी आत्महत्या की रोकथाम की जा सकती है, जिसमें निम्नांकित प्रमुख है :–

1. आत्महत्या के इच्छुक व्यक्ति से अधिक सहानुभूति पूर्व व्यवहार करके मनः स्थिति को समझा जाय, उसे परिवार की संम्भावित कठिनाईयो का ज्ञान कराकर उसके भावावेश को कम किया जाये तथा उसके दृष्टिकोण को समझने का प्रयत्न किया जाये।

2. आत्महत्या का व्यवहार स्वयं में एक आवेग है जिसका सामाधान मनोवैज्ञानिक व्यवहार द्वारा किया जा सकता है।

3. जो पर्यावरण संबंधी परिस्थितियां आत्महत्या की प्रेरणा देती है, उनमें सामाजिक सुरक्षा के विभिन्न प्रावधानों द्वारा सुधार किया जाना चाहिए।

4. आत्महत्या की रोकथाम हेतू ऐसी समितियों का गठन होना चाहिए जो जीवन से निराश व्यक्तियों की समस्याओं का सहानूभूति पूर्वक विश्लेषन करके उनकी सामाजिक–आर्थिक सुरक्षा का प्रबंध कर सकें।

5. पिछड़े और निराश्रित वर्गो हेतू रोजगार की अधिक सुविधाए दी जांय, वृद्धो तथा अपंगो हेतू राज्य द्वारा आर्थिक सहायता प्रदान की जाय तथा स्त्रियों का शोषण करने वाली प्रथाओं के प्रभावों को कानून द्वारा समाप्त किया जाये। तभी आत्महत्या की रोकथाम की जा सकती है।

6. किसी व्यक्ति द्वारा आत्महत्या करने में जो व्यक्ति उत्तरदायी हो, उन्हें राज्य द्वारा कठोर दण्ड दिया जाये जिससे परिवार और समाज में शोषण का उन्माद कम हो सके और आत्महत्या को समाप्त किया जा सके।

आत्महत्या निवारन हेतू निर्दिष्ट उपयुक्त सुझावों के अलावा भी आत्महत्या में कमी करने हेतू अन्य आवश्यक प्रामर्श इस प्रकार है :–

क. बच्चों को मातृभाषा में निःशुल्क एवं समान शिक्षा व्यवस्था लागू हो।

ख. शिक्षण संस्थाओं का संचालन राजनीतिक रहित तथा नव्यमानवतावादी शिक्षाविदों द्वारा गठित शिक्षा परिषद् का संचालन हो।

ग. पूर्ण शिक्षा बाद डिग्री नही बल्कि योग्यता के आधार पर शत् प्रतिशत रोजगार की गारंटी हो।

घ. युवा लोगो के मानसिक तनाव से बचने के लिए शारीरिक, मानसिक एवं अध्यात्मिक विकास हेतू ''अनुभवातित चिंतन और योगाभ्यास ही एक मात्र विकल्प है।

ड. आर्थिक समानता हेतु–**''शांति नहीं जब तक, तब तक सुख भाग न नर का कम हो। नही किसी को बहुत अधिक हो, नहीं किसी को कम हो''**। इस समाज निति के अनुसार समाज का संचालन हो

च. बीना आदेश के जरूरत से ज्यादा धन संचय करने की अनुमति नहीं हो। इसे कठोरता से लागू किया जाय तो आर्थिक असमानता को कम किया जा सकता है जो आत्महत्या का अहम कारण है, ताकी मानवबिष को न्यूनतम आवश्यकताओं भोजन, वस्त्र, आवाश, शिक्षा, चिकित्सा, मिल सके।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, इसे समाज में जीवित रहने के लिए मनुष्य की न्युनतम आवश्यकताओं की पूर्ति सहजता के साथ उपलब्ध हो जाए तो मनुष्य अत्यात्मिकता की ओर रूख करेगा।

अपना जीने का लक्ष्य ''आत्मोक्षार्धम जगत हितायच्'' बनाकर सद्गति की प्राप्ति करेगा। जिससे मनुष्य के जीवन में निराशा नजर नहीं आएगी।

खण्ड – सी

अध्ययन विधि

मानव समाज एक जटिल समग्रता है, जिसमें एक दुसरे से भिन्न इतनी अधिक अंतरक्रियाओं तथा प्रक्रियाओं का समावेश होता है कि उन्हें व्यवस्थित रूप से समझे बिना समाज के वास्तविक रूप से समझने का दावा नहीं किया जा सकता है। अगस्त कॉम्ट से पहले तक अधिकांश विचारकों और दार्शनिकों की धारणा थी कि प्राकृतिक घटनाओ के समान समाजिक घटनाओं का वैज्ञानिक आधार पर अध्ययन नहीं किया जा सकता। कॉम्ट ने ऐसी भ्रमपूर्ण धारणाओं को दुर करते अपने प्रत्यक्षवादी सिद्धांत के द्वारा यह स्पष्ट किया है कि सामाजिक घटनाओं का प्रत्यक्ष रूप से अवलोकन, परीक्षण, वर्गीकरण तथा सामान्यीकरण वह प्रमुख आधार है, जिसके द्वारा सामाजिक घटनाओं का भी सामाजिक अध्ययन संभव है।

सर्वेक्षण शब्द अंग्रेजी भाषा के सर्वे (Suruey) का हिन्दी रूपान्तरण है। यह दो विभिन्न स्थानों के शब्दो से मिलकर बना है। पहला शब्द (Sur) है, जिसकी उत्पत्ति फ्रेंच भाषा से हुई है। दुसरा शब्द (Ieeiv) है जो लैटिन भाषा से लिया गया है तथा इन दोनो का अर्थ क्रमश 'उपर' और 'देखना' है। इस प्रकार (Suruey) का शब्दिक अर्थ किसी घटना को उपर से देखना है। वर्तमान समय में सर्वेक्षण के लिए इसी अर्थ को पर्याप्त नहीं समझा जाता, बल्कि एक पद्धति के रूप में सामाजिक सर्वेक्षण का उपयोग एक विशेष अर्थ में किया जाने लगा है। सर्वेक्षण का तातपर्य एक ऐसी अनुसंधान प्रणाली से है जिसके अंतर्गत अध्ययनकर्ता से संबंधित इकाईयों का स्वयं अवलोकन करता है और पक्षपात रहित ढंग से तथ्यों को एकत्रित करके सामान्य निष्कर्ष प्रस्तुत करता है।

सामाजिक सर्वेक्षण का मुख्य उदेश्य :–

- सामाजिक तथ्यों का एकीकरण :–
- सामाजिक समस्याओं का अध्ययन :–
- सामाजिक समस्याओं का सामाधान :–
- सामाजिक घटनाओं का व्याख्या :–
- कार्य–कारण संबंध का ज्ञान :–
- परिकल्पना का निर्माण तथा परिक्षण :–
- सामाजिक सिद्धांतो का सत्यापन :–
- विकाश कार्यक्रमों के प्रभाव का मूल्यांकन :–
- जनमत का पुर्वानुमान :–

सामाजिक सर्वेक्षण एवं सामाजिक अनुसंधान की प्रकृति उद्देश्यो तथा पद्धतियों में इतनी अधिक समानता है कि एक स्थान पर अक्सर दुसरे शब्दों का प्रयोग कर लिया जाता है। इन समस्याओं को निम्नलिखित रूप से समझा जा सकता है।

- सामाजिक सर्वेक्षण तथा सामाजिक अनुसंधान दोनो का ही संबंध घटनाओं क व्यवस्थित रूप से अध्ययन करने से है।
- सर्वेक्षण तथा अनुसंधान के अंतर्गत केवल वर्तमान तथ्यो का ही अध्ययन न करके नए तथ्यों को खोजने का भी प्रयत्न किया जाता है।
- अध्ययन प्रविधियों के दृष्टिकोण से भी सर्वक्षण तथा अनुसंधान एक दुसरे के समान है। उदाहरण के लिए अवलोकन, निर्देशन, प्रशनावली, अनुसूची,

साक्षात्कार तथा व्यक्ति अध्ययन जैसी प्रविधियां का प्रयोग दोनो में समान रूप से महत्वपूर्ण है।

- सामाजिक सर्वेक्षण के माध्यम से ही सामाजिक अनुसंधानक कर्ता अपनी परिकल्पनाओं की सत्यता जॉच करता है। इस दृष्टि कोण से भी सामाजिक सर्वेक्षण तथा अनुसंधान के बीच घनिष्ट संबंध है।
- सामाजिक सर्वेक्षण तथा अनुसंधान दोनो का उदेश्य ज्ञान की वृद्धि के द्वारा सामाजिक जीवन को अधिक प्रगतिशील और संगठित बनाना है।

सामाजिक अनुसंधान एक वैज्ञानिक योजना है, जिसका उदेश्य तार्किक क्रमबद्ध पद्धतियां द्वारा नवीन तथ्यों का अन्वेशण तथा पुराने तथ्यो की पुनः परीक्षा एवं उनमें पाए जाने वाले अनुक्रमांक अंतः संबंधो कारण सहित व्याख्याओ तथा उनको संचालित करने वाले स्वभाविक नियमो का विशलेशण करना है।

सामाजिक शोध में उपयोगी प्रबृधि :–

1 **उपकल्पना/प्राककल्पना का निर्माण** :–उपकल्पना किसी विषय से संबंधित एक सामान्य अनुमान अथवा विचार है, जिनके संदर्भ में संपूर्ण अध्ययन किया जाता है। प्रारंभिक स्तर पर उक उपकल्पना अनुसंधान का कार्य मार्ग–निर्देशन करती है। अध्ययन के बीच में यह अनुसंधान कर्ता को इधर –उधर भटकाने से रोकती है तथा अध्ययन के अंत में यह उपयोगी निष्कर्ष प्रस्तुत करने तथा पूर्व निष्कर्षो का सत्यापन करने में सहायता देती है।

2 **अवलोकन** :– अवलोकन सामाजिक शोध की एक महत्वपूर्ण प्रविधि है इसका तात्पर्य उक विशेष विषय से संबंधित घटनाओं को व्यवस्थित रूप से देखना तथा अपनी बुद्धि और कुशलता के आधार पर घटनाओं के कार्य कारण संबंध को समझाता है

3 **अनुसूची** :– यह प्रश्नो की एक ऐसी लिखित सूची है, जिसे लेकर अध्ययनकर्ता उत्तरदाता के पास स्वयं जाता है और विभिन्न प्रश्नो को पूछ कर स्वयं ही उनके उत्तरो का आलेखन करता है। प्रथमिक सामग्री का संकलन करने के लिए अनुसूची एक ऐसी प्रविधि है सिमें अवलोकन साक्षातकार तथा प्रश्नावली की विशेषताओं का समन्वय होता है। इसके अंतर्गत अध्ययनकर्ता प्रश्नो की एक निश्चित सूची लेकर उत्तरदाताओं से साक्षात्कार के रूप में विभिन्न सूचनाएं प्राप्त करता है तथा स्वयं भी विभिन्न तथ्यों का अवलोकन करके दिए गए उत्तरों की सत्यता जांचने का प्रयत्न करता है।

4 **निदर्शन** :– इसका तात्पर्य समस्त इकाईयो में से कुछ इकाईयों का चयन करना है। वास्तव में निदर्शन एक ऐसी पद्धति है जिसके द्वारा हम समस्त इकाईयों में से कुछ इकाईयों का चयन अनेक स्वीकृत कार्य विधियों की सहायता से इस प्रकार करता है, जिससे चुनी गई इकाइयां सेपूर्ण समग्र की विशेषताओं का प्रतिनिधित्व कर सके। इस विधि से कई लाभ हो सकते है।

5 **साक्षत्कार** :– प्रथमिक तथ्यो के संकलन करने के लिए यह एक अत्यधिक लोकप्रिय और बहु प्रचलित पद्धति है। साक्षात्कार दो व्यक्तियों के बीच पायी जाने वाली एक विशेष सामाजिक परिस्थिति है। जिसमें से एक मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया के अंतर्गत दोनो व्यक्ति परस्पर उत्तर–प्रति–उत्तर करते हैं। एक अनुसंधान कर्ता दुसरा उत्तरदाता होता है।

मैने भी अपने अध्ययन कार्य में साक्षात्कार प्रविधि का उपयोग किया, जिससे विषय से संबंधित जानकारियां प्राप्त करने में अधिक सहूलियत हुई, जो अत्यधिक विश्वासनीय तथा अधिक व्यवहारिक सावित हुई।

GULAB CHAND PRASAD AGRAWAL COLLEGE
(Supported by : MDDBPA CHARITABLE TRUST, Regd.- 1999) Affiliated by N.P.U.
Village : Sadma, Post : Chhattarpur, Distt.: Palamau (Jharkhand)

Ref. G.C.P.A/14/2017

Date 21.03.2017

साक्षात्कार अनुसूचि का प्रतिलिपि
युवा वर्ग करते आत्महत्या पलामू के संदर्भ में
एक समाज शास्त्रीय अध्ययन

निवेदन

महोदय,

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य शैक्षणिक है जिसके द्वारा पलामूँ नगरीय क्षेत्र में रहनेवाले "युवावर्ग करते आत्महत्या पलामूँ के संदर्भ में एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण एवं तथ्य एकत्रित करना है।

आपकी सूचनाएँ गुप्त रखी जाएगी।

अतः आपसे नम्र निवेदन है कि आप स्वतंत्र रूप से उत्तर दें जिसके लिए महाविद्यालय परिवार आपका आभारी रहेंगे।

धन्यवाद!

21/03/17
प्राचार्य
प्रो० जितेन्द्र कुमार

मुख्य पर्यवेक्षक :-
प्रो० राजमोहन (समाजशास्त्र विभाग)
गुलाबचन्द प्र०अ०महा०वि०, सदमा, छत्तरपुर

City Office : PUSHPANJLI, Dak Bankgla Road, P.O- Daltonganj-822101, Palamau (Jharkhand)

तथ्य संकलन सारणी एवं विशलेषण

पलामू के युवाओं में आत्महत्या की समस्यायें देखनें को मिल रही है। अतः इन सभी समस्याओ की निदान हेतु विभिन्न चरों को आधार बनाया है। जिसके अंतर्गत मुख्य रूप से उन सभी के लिए आयु, वैवाहिक स्थिति, धर्म, शिक्षा, लिंग, को महत्वपूर्ण आधार माना है।

(क) **आयु के आधार पर** :– इन समूह में पॉच उत्तर दायी को वर्गीकृत किया जाता है। और उसके साथ संपर्क स्थापित किया गया ये समूह 15–35, 36–45, 46–55, 56–60, 61– से अधिक है।

आयु	आत्महत्या की संख्या	प्रतिशत
15–35 वर्ष	10	40
36–45 वर्ष	5	20
46–55 वर्ष	5	20
56–60 वर्ष	3	12
61 से अधिक	2	8
कुल	25	100

आयु के आधार पर 25 आत्महत्या को आयु के आधार पर वर्गीकरण किया गया है, 14–20 वर्ष, 20–30 वर्ष, 30–40 वर्ष, 40–50 वर्ष तथा 50 से अधिक आयु वालो का वर्गीकरण किया गया जिसमें आत्महत्या कि संख्या 10, 5, 5, 3, तथा 2 है जिसका प्रतिशत क्रमशः 40, 20, 20, 12, तथा 8 है।

(ख) **वैवाहिक स्थिति के आधार पर** :– हमारे तथ्यों के संकलन के दौरान पॉच प्रकार के तथ्यों को संग्रहित किया है जो अविवाहित, विवाहित, विदुर, विधवा, तलाक़ सुदा है।

वैवाहिक स्थिति	आत्महत्या की संख्या	प्रतिशत
अविवाहित	10	40
विवाहित	5	20
विदुर	1	4
विधवा	5	20
तलाक सुदा	4	16
कुल	25	100

वैवाहिक स्थिति के आधार पर 25 आत्महत्या का वर्गीकरण किया गया है जिसमें आत्महत्या कि संख्या अविवाहितों कि संख्या 10 है, विवाहित 5, विदुर 1, विधवा 5, तलाकसुधा 4 है जिसका प्रतिशत क्रमश 40, 20, 4, 20,तथा 18 है।

(ग) **धर्म के आधार पर** :– इन समूह में पॉच उत्तर दायी को वर्गीकृत किया जाता है। जिसमे हिन्दु, मुस्लिम, ईसाई और जनजाति को रखा गया है।

धर्म	आत्महत्या की संख्या	प्रतिशत
हिन्द धर्म	10	40
मुस्लिम धर्म	2	8
ईसाई धर्म	3	12
जनजाति	10	40
कुल	25	100

धर्म के आधार पर 25 आत्महत्या से धर्म के आधार पर वर्गीकरण किया गया है, जिसमे हिन्दु धर्म 10, मुस्लिम धर्म 2, ईसाई धर्म 3 और जनजाति 10, को लिया गया है, जिसका प्रतिशत क्रमशः 40, 8, 12, तथा 40 है।

(घ) **शिक्षा के आधार पर** :– हमारे तथ्यों के संकलन के दौरान पॉच प्रकार के तथ्यों को संग्रहित किया है जो अशिक्षित, साक्षर, प्राथमिक, माध्यमिक और स्नातक है।

शिक्षा	आत्महत्या की संख्या	प्रतिशत
अशिक्षित	1	4
साक्षर	3	12
प्राथमिक	3	12
माध्यमिक	4	16
स्नातक	14	56
कुल	25	100

शिक्षा के आधार पर 25 आत्महत्या का वर्गीकरण किया गया है जिसमें आत्महत्या कि संख्या अशिक्षित कि संख्या 1 है, साक्षर 3, प्राथमिक 3, माध्यमिक 3, स्नातक 14 है, जिसका प्रतिशत क्रमश 4, 12, 12, 16, तथा 56 है।

(ड.) **लिंग के आधार पर** :– लिंग के आधार पर आत्महत्या को दो श्रेणियों में बांटा गया है, जिसमें पुरूष वर्ग और महिला वर्ग को रखा गया है।

लिंग	आत्महत्या की संख्या	प्रतिशत
पुरूष	18	72
महिला	7	28
कुल	25	100

उपरोक्त सारणी मे 25 आत्महत्या का लिग के आधार पर वर्गीकरण किया गया है। पुरूष आत्महत्या की संख्या 18 और प्रतिशत 72 है। महिला उत्तरदाताओं कि संख्या 7 और प्रतिशत 28 है।

खण्ड – डी

साक्षात्कार अनुसूचि का प्रतिलिपि

1 देश के युवाओं में आत्महत्या की बढ़ती प्रवृति राष्ट्र के लिए चिंता का विषय हैहै?

क) हॉ –17 प्रतिशत ख) नही– 2 प्रतिशत ग) पता नहीं –1 प्रतिशत

2 क्या समाज को आत्महत्या को रोकने में अहम भूमिका होनी चाहिए?

क) हॉ– 16 प्रतिशत ख) नही– 2 प्रतिशत ग) पता नहीं– 2 प्रतिशत

3 आत्महत्या समाज के लिए निंदा का विषय है?

क) हॉ –15 प्रतिशत ख) नही– 2 प्रतिशत ग) पता नहीं– 3 प्रतिशत

4 मानव जीवन में क्या आत्महत्या सही कदम है?

क) हॉ– 0 प्रतिशत ख) नही– 19 प्रतिशत ग) पता नहीं– 1 प्रतिशत

5 आत्महत्या करने वालों को क्या रोका जा सकता है?

क) हॉ– 1 प्रतिशत ख) नही– 17 प्रतिशत ग) पता नहीं– 2 प्रतिशत

6 क्या आत्महत्या भावनाओं में बहकर लिया गया कदम है?

क) हॉ– 17 प्रतिशत ख) नही– 2 प्रतिशत ग) पता नहीं– 2 प्रतिशत

7 क्या आत्महत्या महिलाओं से ज्यादा पुरूष किया करते है?

क) हॉ– 1 प्रतिशत ख) नही– 9 प्रतिशत ग) पता नहीं– 10 प्रतिशत

8 गर्मी के मौसम में क्या आत्महत्या ज्यादा करते है?

क) हॉ– 1 प्रतिशत ख) नही– 3 प्रतिशत ग) पता नहीं– 16 प्रतिशत

9 आत्महत्या एक समाजिक कारण है?

क) हॉ– 17 प्रतिशत ख) नही– 1 प्रतिशत ग) पता नहीं– 2 प्रतिशत

10 आत्महत्या में विफल हुए लोग क्या पुनः प्रयास करते है?

क) हॉ– 4 प्रतिशत ख) नही– 7 प्रतिशत ग) पता नहीं– 9 प्रतिशत

11 आत्महत्या में विफल लोग वश्चाताप करते है, गलती का एहसास करते है कि ऐसा कदम नहीं उठाना चाहिए?

क) हॉ– 14 प्रतिशत ख) नही –2 प्रतिशत ग) पता नहीं– 4 प्रतिशत

12 क्या सरकार द्वारा गैर सरकारी संगठन जो समाज में हो रहे आत्महत्याओं को रोकने का प्रयास करते हैं, उन्हें सम्मान/प्रोत्साहन देना चाहिए?

क) हॉ– 17 प्रतिशत ख) नही– 2 प्रतिशत ग) पता नहीं– 1 प्रतिशत

13 सरकार द्वारा आत्महत्या पर कड़ी से कड़ी कानून बनानी चाहिए?

क) हॉ– 17 प्रतिशत ख) नही– 0 प्रतिशत ग) पता नहीं– 3 प्रतिशत

14 आत्महत्या के अंतिम समय में आत्महत्या करने का कारण बताने का प्रयास करते है?

क) हॉ– 16 प्रतिशत ख) नही– 2 प्रतिशत ग) पता नहीं– 2 प्रतिशत

15 क्या आत्महत्या को रोकने के लिए समाज में आपकी सकारात्मक पहल होगी?

क) हॉ– 16 प्रतिशत ख) नही– 4 प्रतिशत ग) पता नहीं– 0 प्रतिशत

16 क्या बुजुर्गो के अपेक्षा युवा वर्ग ज्यादा आत्महत्या करते है?

क) हॉ– 18 प्रतिशत ख) नही– 2 प्रतिशत ग) पता नहीं– 0 प्रतिशत

निष्कर्ष

"युवा करते आत्महत्य के पलामू के सदर्भ में" के क्षेत्रीय कार्य के इस निकर्ष पे हम पहुचे है, कि– पलामू में युवा ज्यादा आत्महत्या कर रहे हैं, अशिक्षित के अपेक्षा शिक्षित, महिला के अपेक्षा पुरूष ज्यादा आत्महत्या करते है।

उपयुक्त विवेचना से स्पष्ट है कि आत्महत्या की समस्या का विस्तार सभी देशो में तेज गति से हो रहा है। नवयुवको में यह आत्महत्या एक गम्भीर समस्या का रूप ग्रहण कर रहा है इसके कारण असामाजिक एवं अवैधानिक कार्यो में भी बृद्धि हो रही है। इसकी रोकथाम के लिए सभी स्तरों पर प्रयास करने की आवश्यकता है। यह एक समाजिक समस्या है। इस संबंध में प्रभावशाली कानून की आवश्यकता है एवं उस कानून को कठोरता से लागू किया जाना चाहिए।

संदर्भ सूची

1	सामाजिक मुद्दे एवं समस्याएं	
2	मनोविकृति–विज्ञान	डॉ. विनती आनन्द
3	समाजिक अनुसंधान पद्धतियां एवं विधियां	
4	प्रउत	श्री. पी. आर. सरकार
5	कुरूक्षेत्र	रामधारी सिंह दिनकर
6	सामाजिक विचारों के आधार	
7	दैनिक जागरण अखबार	रांची संस्कनण 20 मई 2016 (लेख जगमोहन सिंह राजपुत)
8	प्रभात खबर रांची संस्करण	11 मई 2016
9	राष्ट्रीय नवीन मेल	04मार्च 2017, 08 मार्च 2017

10	धर्म का प्राण बिन्दु है अनुभवातित चिंतन	लेख– राज मोहन
11	युवा करते आत्महत्या	(प्रउत मासिक पत्रिका)
11	पलामू डायरेक्ट्री (हिन्दुस्तान दैनिक)	प्रो. राज मोहन
12	महाविद्यालय के नोट बुक	प्रो. राज मोहन

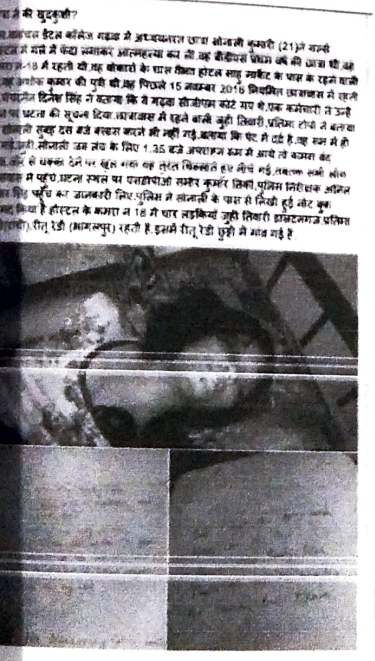

फोटो ग्राफ

...ने की खुदकुशी?

...इंटर कॉलेज ... में अध्ययनरत छात्रा सोनाली कुमारी (21) ने ... में फंदा लगाकर आत्महत्या कर ली. वह ... की छात्रा थी. ... में रहती थी. ... कुमार की पुत्री थी. वह पिछले 15 नवम्बर 2016 ... छात्रावास में रहती ... दिनेश सिंह ने बताया कि ... घटना की सूचना दिया. छात्रावास में रहने वाली जूही तिवारी, प्रतिमा टोपो ने बताया ... सोनाली सुबह दस बजे ... पुलिस ने सोनाली के पास से लिखी हुई नोट बुक ... किया है. हॉस्टल के कमरा न 18 में चार लड़कियां जूही तिवारी ... प्रतिमा ..., रीतू रेडी (भागलपुर) रहती है. इसमें रीतू रेडी पूजी में ... गई है.

ट्रेन के आगे कूद कर युवक ने दी जान

मेदिनीनगर(प्र.सं)। शहर थाना क्षेत्र के नावाटोली निवासी इकबाल हुसैन का पुत्र आरिफ अंसारी आत्महत्या करने के प्रयास में ट्रेन के आगे कूद गया। जिससे उसके दोनों पैर कट गये। बेहतर इलाज के लिए उसे रांची रेफर कर दिया गया। अचानक उसकी तबीयत ज्यादा बिगड़ गयी और लातेहार में मौत हो गयी। घटना के बारे में बताया जाता है कि आरिफ की शादी कुछ वर्ष पहले शाहपुर नई मुहल्ला निवासी अकबर हुसैन की लड़की हीना परवीन से हुई थी। कुछ वर्ष बीतने पर पति-पत्नी के बीच छोटी-छोटी बातों को लेकर झगड़ा होने लगा। घरेलू विवाद से तंग आकर वह सोमवार को जिन्दगी की बाजी हार गया। आरिफ का शव पोस्टमार्टम के लिए देर रात सदर अस्पताल पहुंच गया है।

रांची में पलामू की छात्रा ने हॉस्टल में की खुदकुशी, परिजनों ने जतायी हत्या की आशंका

मेदिनीनगर(प्र.सं)। राजधानी के एक निजी हॉस्टल में रह कर मेडिकल की तैयारी कर रही पलामू की एक छात्रा की संदिग्ध अवस्था में मौत हो गई. घटना रांची के लालपुर थाना क्षेत्र की है।

क्या है मामला : लालपुर में वीमेंस कॉलेज गली के फाईटर गर्ल्स हॉस्टल में रह कर मेडिकल की तैयारी कर रही छात्रा इशिता सिंह की मौत गुरुवार देर रात हो गई। मृतका के परिजनों ने छात्रा की हत्या की आशंका जताई है। मृतका के रिश्तेदार किशोर सिंह ने बताया कि गुरुवार रात आठ बजे तक इशिता ने परिवार के लोगों के साथ फोन पर बात की थी। उस दौरान वह बिल्कुल नॉर्मल थी और आम दिनों की तरह बातचीत की। उसके ठीक एक घंटे बाद हॉस्टल प्रबंधन द्वारा सूचना दी गयी कि इशिता ने आत्महत्या कर ली है। किशोर सिंह ने बताया कि दस बजे सूचना मिलने के बाद तुरंत पलामू से निकल कर रांची पहुंचे. इस बीच हॉस्टल संचालकों ने ना तो पुलिस को फोन किया और ना ही परिवार वालों का इंतजार। पुलिस शव को कब्जे में ले कर पोस्टमार्टम के लिए भेज दी है। वहीं मामले की पड़ताल शुरू कर दी है। डीएसपी और एफएसएल की टीम ने छात्रा के कमरे की तलाशी ली। सीटी डीएसपी शंभु प्रसाद सिंह ने कहा कि कमरे की तलाशी से कुछ सामान बरामद किए गए हैं। बहरहाल अनुसंधान चल रहा है. इसके बाद ही किसी नतीजे पर पहुंचा जा सकता है।